#२६: सत्यता-२ : सह-अस्तित्व में जागृति ही नियति है

दिनांक -१७/१०/२०११

सह-अस्तित्व में जागृति ही नियति है | अस्तित्व स्वयं सह-अस्तित्व रूप में व्यवस्था है | व्यवस्था का परिभाषा ही है आवश्यकता के अनुसार यथार्थता, वास्तविकता, सत्यता के साथ जीने का क्रम और विधि, समझदारी के रूप में देखा गया है | यही नियति है | सह-अस्तित्व नित्य प्रभावी, प्रकटनशील होने की बात स्पष्ट हो चुकी है | इस आधार पर मानव ही ज्ञानावस्था में होने, मानव ही चारों चेतना के रूप में प्रमाण प्रस्तुत करने वाला, होना, रहना अध्ययनगम्य हो चुका है | मानव सहज विधि से जीव चेतना, मानव चेतना, देव चेतना, दिव्य चेतना में प्रमाणित होने का अवसर है जिसमें से जीव चेतना विधि से हम मानव अवैधता को वैध मानने को तैयार बैठे हैं | यही भ्रम का मूल वस्तु है | जैसा लाभोन्मादी विधि से सोचने पर पता चलता है कि ज्ञानी, विज्ञानी, अज्ञानी के रूप में जीता हुआ मानव अर्थात जीव चेतना में जीवों से अच्छा जीता हुआ मानव स्वयं का शोषण न चाहते हुए दूसरों के शोषण में सहमत होता है | यही व्यापार है | व्यापर विधा में शोषण करना वैध माना है | इसे सोचने पर पता लगता है कि जो शोषण करता है उसका शुष्क रहना होना आवश्यक है | इस विधि से मानव जिसे सम्पदा मानता है अर्थात भ्रमवश जिसे सम्पदा मानता है, वही एक दिन विपदा हो जाता है | भले ही समय कम लगे या ज्यादा लगे | इस क्रम में यह पाते हैं अथवा निष्कर्ष निकलता है कि स्वयं के लिये होने वाली बातों को वैध न माना जाय इसी के साथ यह भी विचार आता है कि वैध किसको माना जाय | विकल्पात्मक प्रस्ताव में समाधान, समृद्धिपूर्वक जीना ही है |

यह न्याय धर्म सत्य सहज दृष्टि से सफल है जबकि जीवन चेतना में प्रिय हित लाभ दृष्टियों का ही प्रकाशन है | समाधान सहित परिवार में ही समृद्धि का प्रकाशन है | व्यक्ति के रूप में समृद्धि का प्रकाशन नहींहोता | व्यक्ति के रूप में केवल समाधान ही प्रकाशित होता है | समाधान सहअस्तित्व विधि से प्रमाणित होता है | समाधान, समृद्धि परिवार में ही होता है | एक से अधिक व्यक्तियों के साथ ही प्रकाशन है, प्रमाण है | इस आधार पर पता चलता है कि मानव परिवार में जीना ज्यादा श्रेयस्कर है | प्रकारांतर से जीता ही है | परिवार में जीते समय में ज्यादा संग्रह हो या न हो, एक से अधिक व्यक्तियों के साथ जीने पर ही, परिवार ही समझदार परिवार के रूप में पहचाना गया है | १० समझदार व्यक्तियों का परिवार होता है | १० समझदार व्यक्तियों में से कम से कम ६ समझदार व्यक्ति उत्पादन कार्य में समर्थ होते हैं जिसमें एक एक व्यक्ति का उत्पादन १०-१० व्यक्तियों से अधिक व्यक्तियों के आवश्यकता के लिये आहार, आवास, अलंकार एवं दूरसंचार वैभव के लिये पर्याप्त होता है | ऐसे ६ व्यक्तियों का उत्पादन कितनों को पूरा करेगा आप ही सोच लीजिए | इस क्रम में हर समझदार परिवार, एक व्यक्ति या दो समझदार व्यक्तियों को व्यवस्था कार्य के लिये निर्वाचित कर सकता है |

जागृति का प्रमाण सह-अस्तित्व रूप में उपकार करने की विधि में अंत होता है | उपकार का आशय आगे की पीढ़ी को समझदार बनाने से ही है | रासायनिक, भौतिक रूप से जो उत्पादन किया जाता है वह सारे उत्पादन आहार, आवास, अलंकार व दूरसंचार के अर्थ में ही सार्थक होता है न कि चोरी, चकारी, शोषण, युद्ध के लिये | शोषण, युद्ध के लिये जितना भी वस्तु प्रयोग हुआ वही सब अपव्यय है | इस आधार पर हर मानव आकलन कर सकता है कि अभी कितना सदुपयोग हो रहा है कितना दुरूपयोग हो रहा है | अपराधों के अर्थ में कितना उपयोग हो रहा है | अपराध से मानव का गम्य

स्थली कहीं मिलता है या नहीं? अपराधिक व्यवस्था के नाम पर कुछ भी किया जाता है, वह सब सुख, शांति, संतोष, आनंद रुपी गम्य स्थली को नहीं पाता | साथ में समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित नहीं कर पाता | कितना ही समय की लम्बाई में प्रयोग करके देखें, परिणाम इतना ही है | इस प्रकार मानव का अध्ययन से पता चलता है कि मानव शुभ चाहने वाला है | सर्वशुभ चाहना ही एकमात्र दिशा है और गम्य स्थली है | सर्वशुभ का आचरण स्वरूप ही समाधान, समृद्धि, अभय, सह-अस्तित्व को प्रमाणित करता है जिसके आधार पर फलित रूप में सुख, शांति, संतोष, आनंद प्रमाणित होता है | यही नियति क्रम है | नियति ही सदैव जागृति और संतुलन के अर्थ में है | इसके परम्परा में मानव ही जागृतिपूर्वक कार्यरत रहता ह जिसका आचरण रूप में ही समाधान, समृद्धि, अभय, सहअस्तित्व प्रमाणित होता है | नियम, नियंत्रण, संतुलन, न्याय, धर्म, सत्य प्रमाणित होता ही है | साथ में स्वधन, स्वनारी/ स्वपुरुष, दयापूर्ण कार्य व्यवहार प्रमाणित होता है | इन तीनों प्रकार के प्रमाणों के आधार पर जागृत परम्परा का वैभव होता है |

जागृत मानव परम्परा में ही अखण्ड समाज सार्वभौम व्यवस्था वर्तमान होता है | यही सर्वशुभ का गम्य स्थली है, प्रयोजन है, और आवश्यकता भी है | इस विधि से यदि हम समझदार हो पाते हैं तभी धरती अपनी ताकत से अथवा अपनी शक्तियों से कितना संतुलित होता है, देखा जा सकता है | अन्यथा ऐसी स्थिति को देखने का अवसर नहीं बनता | मानव जाति के अलावा तीनों अवस्था आहार, निद्रा आदि क्रियाकलापों में व्यस्त रहता है, इसके अलावा कुछ नहीं कर पाता अथवा श्रम,गति, परिणाम के रूप में रहता है | इसे ऐसा देखा जा सकता है कि भौतिक, रासायनिक सम्पूर्ण वस्तुएं परिणामनुषंगी व्यवस्था है | जबकि प्राणावस्था बीजानुषंगी व्यवस्था है तथा जीवावस्था वंशानुषंगी व्यवस्था है | मानव जात अभी तक विचारानुषंगी विधि से जिया है | मानव विचार अर्थात भ्रमित मानव विचार में जीव चेतना प्रमाणित है | जीव चेतना विधि से मानव का गम्य स्थली नहीं मिलता | गम्य स्थली का मतलब हर मानव सुखी होना चाहता है, वह नहीं मिलता | इसलिए विकल्पात्मक दर्शन, विचार, शास्त्र, संविधान, योजना मानव सम्मुख प्रस्तुत है | इसमें अध्ययनपूर्वक पारंगत होने में ही यथार्थता, वास्तविकता, सत्यतापूर्वक जीने के लिये वरीयता आता है | इनकी वरीयता से हर नर-नारी अथवा हर मानव समझदार होना होता है | यह समझदार मानव का प्रमुख भाग है | यह शिक्षा विधि से सर्वसुलभ होना पाया जाता है | यह आज की परम आवश्यकता है |

सर्शुभ हो! जय हो! मंगल हो! कल्याणहो!

- ए.नागराज | प्रणेता एवं लेखक, मध्यस्थ दर्शन (सहअस्तित्ववाद) | श्री भजनाश्रम, अमरकंटक, जिला अनूपपुर , म.प्र. भारत